श्रीराम परिहार के ललित में निबंधों सांस्कृतिक चित्रण

सुभाष सुपुत्र श्री रामकिशन
गाँव व डा. - भट्टू कलाँ
जिला - फतेहाबाद (हरियाणा) 125053

भूमिका – वर्तमान परिवेश में अनेक विधाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया जा रहा है | इसमें ललित निबंध भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं | ललित निबंधकारों की श्रेणी में श्रीराम परिहार का विशेष स्थान है | श्रीराम परिहारमूल रूप से ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़े हुए हैं | इनके निबंधों में भारतीय संस्कृति का व्यापक चित्रण हुआ है | पाश्चात्य संस्कृति का भी इन्होंने विशद् चित्रण किया है | भारतीय लोकगीत परम्परा,पौराणिकता, त्योहारों का चित्रण, बदलते जीवन मूल्य , प्राकृतिक घटनाएँ, चौपाल की संस्कृति तथा लुप्त होते मानवीय रिश्तों को आधार बनाकर ललित निबंधकला क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हैं |

बीज-शब्द – पौराणिकता, विशद्, विश्लेषित, अभिन्न, मर्यादित, मृगांक, व्याख्यायित, उद्धृत, जीवंत, अप्रतिम

श्रीराम परिहार के ललित निबंधों में व्यक्त सांस्कृतिक चित्रण को इन बिन्दुओं के माध्यम से विश्लेषित किया जा सकता है –

1.लोकगीत परंपरा का निर्वाह –लोकगीत भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग रहे हैं | इनके माध्यम से मानव जीवन को समझना सरल हो जाता है | विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले गीत भारतीय संस्कृति को दृढ़ता प्रदान करते हैं | ललित निबंध, 'लोकगीत : नीलकंठी राग' में लोकगीत परंपरा और मानवीय जीवन के संबंधों का सुंदर चित्रण मिलता है –"पहले लोकगीतों में दुल्हन डोली पर चढ़कर विदा होती थी,बाद में बग्गी और बैलगाड़ी का उल्लेख होने लगा और आज लोकगीतों की दुल्हन मोटर-कार में बैठकर जाने लगी है | यह मर्यादित यथार्थ बोध है, जो अपने समय के सब को लोक राग में घोलकर प्रस्तुत करता है |"[1] परिहार जी की लोक परम्पराओं के प्रति गहरी आस्था है, लेकिन समय के साथ-साथ इन परम्पराओं के प्रति लोगों की रूचि कम होती जा रही |

2. पौराणिकता – प्राचीनकाल से ही भारतीय संस्कृति ने लोककथाओं, वेदों, और पुराणों का वर्चस्व रहा है | रामायण, महाभारत, गीता इसके जीवंत प्रमाण है | पौराणिक कथाओं के द्वारा विभिन्न अवसरों पर भारतीय संस्कृति को व्याख्यायित किया गया- "चंद्रमा का एक नाम मयंक है | वह मृगांक है | मृग का शिकार करने के कारण मृग की छाया उसमें पड़ी है | इसी अंक को खरगोश की आकृति भी माना है | उसे शशांक नाम से पुकारा जाने लगा | एक अन्य पौराणिक आख्यान में उसे सही बताया गया है | यह नक्षत्र पति है | दक्ष प्रजापति की सताईस कन्याएँ चंद्र से ब्याही गयी है | ये सताईस कन्याएँ ही नक्षत्र है |"[2] इस प्रसंग में पौराणिक मान्यताओं की सहज व्याख्या प्रस्तुत की गई है |

3. अध्यात्मबोध- परिहार ने आत्मा और परमात्मा के ज्ञान की चर्चा की है | इन्होंने ज्ञान को पानी से भी पतला बताया है | ज्ञान को जितना अधिक प्रयोग में लाया जाएगा, वह उतना ही अधिक समृद्ध होगा | जल रूपी ज्ञान को मटके या टंकी में रोकना नहीं चाहिए | इस सन्दर्भ में इस प्रसंग को उद्धृत किया जा सकता है- "ज्ञान जल से भी पतला होता है | वह जीवन की बारीक़-बारीक़ संधियों में से भी रिसकर बाहर आ जाता है, लेकिन उसे पक्के तौर पर टंकी में या डबरे में रोककर रखेंगे तो उसकी क्या उपयोगिता है ? ज्ञान की उपयोगिता जीवन में सब प्रकार की जड़ता को तोड़ने से है | यहाँ विज्ञान की बात नहीं कर रहा हूँ | विज्ञान की क्रिया और स्थिति दोनों ही ज्ञान से भिन्न हैं, यद्यपि विज्ञान, ज्ञान से जुड़ा हुआ है | ज्ञान होने के बाद भी यदि जड़ता नहीं टूटे, तो वह ज्ञानी मनुष्य उस रीढ़े मटके के समान है, जिसमें पानी तो भरा है, लेकिन उसका ढक्कन नहीं खुल रहा है | ढक्कन खुले भी तो मटका रीढ़ा होने के कारण यदि उसका जल शीतल नहीं है, प्यास नहीं बुझेगी | इसलिए जल की रोज बदल भी जरूरी है |"[3] आध्यात्मिक विचारधारा को समृद्ध करने में परिहार जी के निबंधों की महती भूमिका है |

4. तीज-त्योहारों का चित्रण – भारत को त्योहारों का देश कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी | भारतीय पूरी श्रद्धा और आस्था के साथ त्योहारों को मनाते हैं | प्रत्येक त्योहार किसी-न-किसी मान्यता से जुड़ा है | परिहार ने ललित निबंध 'फागुनी रंग और प्रकृति पर्व' में होली के त्योहार का सुंदर वर्णन किया है-

"फागुन के आगमन के साथ ही एक रंग और प्रकृति में घुलने लगता है | वह है- होली का रंग, प्रीत का रंग | फागुन के पूर्ण होते-होते यह रंग मन – मन से उमड़ –उमड़ कर तन – मन को भिगो देता है | गाँव की फाग - मंडली गाती है –

होली खेलअ रे नन्द को लाल कृष्ण महाराजअ ,
गोकुल म रे मची रही धूम मुरलिया बाजअ ||

इसके साथ ही मृदंग, ढोलक एवं घेरा पर पड़ती थाप के साथ पिचकारी की रसधार में भीगा जन–मन आत्म – विस्मृति की अवस्था धारण करता है | हर आत्मा राधा – कृष्ण बन जाती है |"[4] इन पंक्तियों में त्योहारों की अनुपम छटा तथा उसमें रचे-बसे मनोभावों की व्याख्या अप्रतिम है |

5.सामाजिक बदलाव – समय के साथ – साथ सामाजिक व्यवस्था में भी बदलाव आया है | नीम,पीपल ,वट वृक्षों का आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक दोनों ही आधार पर विशेष महत्त्व रहा है, लेकिन आज बदलाव की स्थिति दिखाई दे रही है | ललित निबंधकार ने यहाँ नीम,वट व पीपल के वृक्षों को प्रतीक मानकर वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के परिवर्तन पर प्रकाश डाला है – "चौराहा, जहाँ पूरा शहर भीड़ में तब्दील हो गया है | पता नहीं भीड़ बना यह शहर कहाँ जा रहा है |

यह भीड़ तब नहीं थी | तब लोग थे, उनकी आँखों में शर्म थी | मन में फूलों का संसार था | आँखों में उषा झाँकती थी | वे सबके बीच बंटे थे | वे लोग पैदल थे | दिनों बाद लौटा तो यह भीड़ बन चुका था | आदमी सबके बीच अकेला हो गया | कभी नीम, पीपल और वट की डाल – डाल पर पंखेरूओं का हुजूम बसता था | अब ये तीनों पेड़ शहर में नहीं हैं | नीम किसी गाँव के मकान के पीछे नंगा हो रहा है |

यूकीलिप्ट्स को अपनी जमीन देकर पीपल घर से भाग गया है | तीज – त्योहारों द्वारा उसकी तलाश जारी है | वट साधु बन गया है |"[5] सामाजिक बदलाव समय की मांग है | परिहार जी का विश्वास है कि सामाजिक बदलाव से मानवता को सबल मिलता है |

6. चौपाल संस्कृति का चित्रण – भारतीय सामाजिक व्यवस्था में चौपाल का विशेष महत्त्व रहा है | यहाँ बैठकर लोग जहाँ विचार – विमर्श करते थे और विभिन्न मुद्दों को सर्वसम्मति से सुलझा लिया जाता था | यहाँ बैठकर लोग मनोरंजन भी करते थे | आज यह स्थिति बदली हुई नजर आ रही है | श्रीराम परिहार ने अपने ललित निबंध 'सर्द रातों में अलाव चौपालों के' में चौपाल संस्कृति का वर्णन किया है- "मैंने बात का और खुलासा किया – चौपाल ने दरअसल सिर्फ मानुस को ही बनाया है | ऐसा मानुस जो निरभिमानी है | चौपाल पर आने के लिए किसी को निमंत्रण/आमंत्रण नहीं भेजा जाता था | वहाँ आने के लिए बुलावा नहीं दिया जाता था | चार – छह दस बैठकर जहाँ हवा से बातें करते समय के साथ घुलमिल जाया करते थे |"[6] चौपाल भारतीय संस्कृति की जीवंत प्रतिमा है | विचारों के आदान-प्रदान के साथ-साथ विभिन्न मुद्दों को सद्भाव से हल करने में चौपाल की भूमिका को विस्मृत नहीं किया जा सकता | परिहार जी के ललित निबंधों में इस यथार्थ को अनुभव किया जा सकता है |

निष्कर्ष – उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि श्रीराम परिहार के ललित निबंध सांस्कृतिक विरासत को जनमानस से रूबरू करते हैं | तीज-त्योहार, लोकगीतों के विविध रंग तथा बदलती मानवीय स्थितियों को चित्रित करने में परिहार जी को महारत हासिल है |

सुभाष

संदर्भ-सूची

1.श्रीराम परिहार, भय के बीच भरोसा, पृ. 125
2. श्रीराम परिहार, झरते फूल हरसिंगार के, पृ. 38
3. श्रीराम परिहार, रसवंती बोलो तो, पृ. 24
4. श्रीराम परिहार, झरते फूल हरसिंगार के, पृ. 46
5. श्रीराम परिहार, ठिठके पल पाँखुरी पर, पृ. 48
6. श्रीराम परिहार, ठिठके पल पाँखुरी पर, पृ. 13

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि 'श्रीराम परिहार के ललित निबन्धों में सांस्कृतिक चित्रण' विषयक शोध-पत्र मौलिक तथा अप्रकाशित है |

सुभाष सुपुत्र श्री रामकिशन
गाँव व डा. - भट्टू कलाँ
जिला - फतेहाबाद (हरियाणा) 125053